Academe *Journal of Education & Psychology*
Volume-3, Issue-2, Year-2013 (July- December)
PP: 18-21 *ISSN No: 2249-040X*

तकनीकी प्रयोग से हिन्दी का प्रसार

किरण शर्मा

वरिष्ठ एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डी0ए0वी0 कॉलेज फॉर गर्ल्ज़, यमुनानगर ।

भारतीय अस्मिता की पहचान हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की एक आधिकारिक भाषा बनाने का संकल्प 10 अप्रैल 2003 को भारत के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के आश्वासन पर विदेश राज्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह ने लोकसभा के मंच से घोषित किया। इसके लिए लगभग सौ करोड़ रूपए के खर्च का अनुमान अंतिम निर्णय लेने में बाधक नहीं होगा। इसकी आधिकारिक घोषणा पारामारिबो (सूरीनाम) में 5 से 9 जून 2003 को हुए सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन के सुअवसर पर कर दी गई है। वैश्विक हिंदी जगत के लिए आधिकारिक घोषणा का वह दिन किसी पर्व से कम नहीं था। हिंदी अपनी सार्थकता और शक्ति को निंरतर प्रमाणित कर रही है। जिसके परिणाम स्वरूप लोकसभा, राज्यसभा के सर्वोच्च मंच से भारत सरकार को यह आश्वासन देना पड़ा आधिकारिक घोषणा होने के बाद हिंदी जगत को वैश्विक परिदृश्य में उसकी स्थिति और प्रामाणिक उपलब्धियों को एक बार पुनः विश्व के सामने रखने का अवसर मिला। यह साधना तो कोई बिरला साधक ही कर सकता है प्रत्येक भाषा में इतनी सामर्थ्य शक्ति नहीं है इस विषय में कहा जा सकता है।

'ये तो घर है प्रेम का खाला का घर नाहीं।

सीस उतारें भुईं धरै तो इह घर में जाही।।'

आधुनिक युग सूचना क्रान्ति का और सूचना–विस्फोट का है। महाविस्फोटक प्रौद्योगिकी की इस क्रान्तिदर्शिता में हिन्दी का पूरा हस्तक्षेप है। हिन्दी भाषा की लचीली प्रकृति और उदार स्वभाव ने इस प्रौद्योगिकी महाविस्फोटक दर्शन को पचाकर अपनी असंदिग्ध भूमिका प्रमाणित की है। जनसंचारी माध्यमों के अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर हिंदी ने अपनी भूमिका खुद तय की है। प्रिंट मीडिया और इलैक्ट्रोनिक मीडिया के अन्तः संबंधों के बीच हिन्दी ने ठोस सेतु निर्मित किया है।

हिन्दी माँ का दूध और भारत का मानस है, समाज और संस्कृति को परस्पर जोड़ने वाला प्राणतत्व। श्री लोकेश चंद्र ने ठीक कहा है–हिन्दी केवल भाषा ही नहीं संस्कार भी है। भारतीय जनगणना रिपोर्ट में कहा गया है कि हिन्दी के पास ऐसा शब्दकोश और अभिव्यक्ति की ऐसी सामर्थ्य है जो अंग्रेजी से किसी भी प्रकार कम नहीं।[1]

भाषा के बिना मानव पंगु है। हिन्दी मात्र भाषा मात्र नहीं है। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन का भी यही कहना है कि 'हिन्दी वह धागा है, जो विभिन्न मातृभाषा रूपी फूलों को पिरोकर भारत के लिए सुंदर हार का सृजन करेगा।' भारत विविधताओं वाला राष्ट्र है और हिन्दी उसकी प्राण संचेतना है।

आज विश्व के लगभग 136 देशों में हिन्दी का अध्ययन अध्यापन होना इस भाषा की लोकप्रियता, वैज्ञानिकता एवम् सामरस्य चिंतन का प्रमाण है। हिन्दी की शब्द संपदा लगभग सात लाख शब्दों की है और अंग्रेजी की तीन लाख। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि भाषाई उदारता और समरसता की जीवंत शक्ति जितनी हिन्दी में है, उतनी किसी अन्य भाषा में नहीं इसलिए संपूर्ण विश्व में भारतीयों में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हिन्दी है।

'हिन्दी से भारतवर्ष के हर प्रकार के शत्रु को सच्चा भय है। जहाँ–जहाँ हिन्दी की छत्रछाया है, वहाँ–वहाँ ब्राह्मण–गैरब्राह्मण, शिक्षित–अशिक्षित, शहरी–ग्रामीण, छोटे–बड़े के भेद टूट रहे हैं। भाषा के प्रचार के साथ एकदम सच्चा ऐक्य स्थापित होने लगा है। आश्चर्य तो यह है कि एक भाषा का आंदोलन इतनी देर लगाकर शुरू किया गया, किंतु श्रद्धावान, भूतकाल पर अफ़सोस नहीं करता। उसका तो वर्तमान से ही संबंध है। आप विश्वास रखें भविष्य उज्ज्वल है। संस्कृत, संस्कृति और संस्कार की त्रिवेणी हिन्दी की धरोहर है।

आज का युग सूचना, संचार तथा विचार का युग है। तकनीकी एवम् प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विश्व का वर्चस्व तेजी से बढ़ रहा है। प्रचार–प्रसार माध्यमों का तेजी से हो रहा समाजीकरण तथा जन–मानस पर नितंतर बढ़ रहा कम्प्यूटरीकरण का प्रभाव इसके मूल में है। भारत जैसे बहुभाषा–भाषी देश में विदेशों से आई कम्प्यूटर विद्या ने प्रारंभ में अपने अंग्रेजी वर्चस्व से आंतकित अवश्य किया, किंतु भारतीय मनीषा तथा यहाँ की भाषाई–शक्तियों ने इस चुनौती को शीघ्र ही चुनौती दे डाली। अनेक भाषाओं, उपभाषाओं, बोलियों तथा उपबोलियों के इस समृद्ध विश्व में कम्प्यूटर वैज्ञानिकों ने कठोर तथा अथक परिश्रम से, अपनी निष्ठा तथा साधन शक्ति से कम्प्यूटर पर विश्व की सभी प्रमुख भाषाओं को प्रतिष्ठित कर दिया। भाषाओं की संवेदनात्मक शक्ति ने मशीन का हृदय जीत लिया। हिन्दी ने इस दिशा में सर्वाधिक सफलता हासिल की, क्योंकि हिंदी घास खाने वाली भाषा है, मात्र पैट्रोल पीकर जीवित रहने वाली नहीं। घास विशाल भारत के शहरी, ग्रामीण, समतल, पठार, समुद्री अथवा मरुस्थली समस्त क्षेत्रो में मिलती है। उसे कोई सींचे या न सींचे, काटे या रौंदे–यह अपने अन्दर स्थित स्वतः स्फूर्त शक्ति से निरंतर विकास मान एवम् गतिमान रहती है।

वास्तव में भारत का रंगीन स्वप्न इस प्रौद्योगिकी के माध्यम से सूचना एवम् संचार के उपकरणों पर अब साकार होता दिखाई देने लगा है। हिंदी के अनेक सॉफ्टवेयर अब बाज़ार में उपलब्ध है। हमारे दैनिक जीवन के समस्त क्रियाकलापों से लेकर, कार्यालयी, व्यवसायी, वित्तीय वाणिज्यिक, साज–सज्जा परक, गणितीय, तथा इसी प्रकार के अन्य अनेक क्षेत्रों में कम्प्यूटर का सफलतम प्रवेश हो चुका है। जिस प्रौद्योगिकी तथा उसकी भाषा को लेकर हम भयभीत तथा सहमे हुए थे, उसे जीवन के हर क्षेत्र से जोड़कर हमने अपनी भाषाओं से जीत लिया है। हिंदी भाषा इस दृष्टि से भी अग्रणी है।

आज सरकारी या गैर सरकारी कार्यालय हो अथवा व्यवसाय, शिक्षा हो या विज्ञापन, सूचना तंत्र हो या जनसंचार उपक्रम हो या मंत्रालय, निगम हो या निकाय हो अथवा विभिन्न संस्थान, स्कूल हो या विश्वविद्यालय–सभी क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। प्रशिक्षण की बहुलता एवम् सहजता ने भाषा के सशक्तिकरण की दृष्टि से युद्ध स्तर पर अभियान छेड़ दिया है। गृहमंत्रालय, भारत सरकार के अन्तर्गत कार्यरत राजभाषा विभाग ने कम्प्यूटर के हिन्दी अनुप्रयोग की दिशा में राजभाषा नीति का अनुपालन करते हुए अविस्मरणीय योगदान दिया है।

हिन्दी को अब चुटकले, कहानी, कविता या पारंपरिक गद्य–पद्य विधाओं की भाषा मात्र न रहने दिया जाए यह सोचकर उसे प्रौद्योगिकी के तमाम आयामों, दिशाओं एवम् क्षेत्रों से जोड़ दिया गया है। प्रिंट–मीडिया तथा इलैक्ट्रोनिक मीडिया के अंतर्गत चहुँमुखी एवम् बहुमुखी मार्ग प्रशस्त किए गए है। समाचार पत्र, पत्रिकाओं, पोस्टर, बैनर, भित्तिलेखन, हैंडबिल, विज़िटिंग कार्ड, पुस्तक लेखन, विवाह, निमंत्रण पत्र, अभिवादन एवम् बधाई कार्ड, विभिन्न सामग्रियों की पैकिंग पर मुद्रण वस्तुओं पर मुद्रण, वस्त्रों पर मुद्रण, स्टीकर–लेखन आदि अन्य अनेक मुद्रण माध्यमों से अब हिन्दी अपना वर्चस्व स्थापित कर चुकी है। इसका श्रेय प्रौद्योगिकी को ही जाता है।

अध्यतन प्रौद्योगिकी का एक और बहुत बड़ा लाभ हिन्दी को मिला है, और वह है–अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर हिन्दी का व्यापक स्तर पर अवतरण।

वास्तव में जरूरत इस बात की है कि या तो हिंदी भाषी तथा हिन्दी के विद्वान, साहित्यकार, पत्रकार, कलाकार, अध्यापक, प्राध्यापक, विज्ञान तथा तकनीकी के, उद्योग तथा प्रौद्योगिकी के विषयों को, अनुशासनों को हिन्दी में लाएं या इन क्षेत्रों और अनुशासनों के विशेषज्ञ हिंदी के माध्यम से इन विषयों को जन–जन तक पहुंचाए। इस से ज्ञान एवम् प्रतिभा का दोहरा विकास होगा और अंततः राष्ट्र प्रगति करेगा।

सूचना प्रौद्योगिकी से हिंदी को जोड़ने पर कुछ अत्यन्त सुखद परिणाम स्पष्टतः दिखाई देते है। एक तो जन–मानस से जुड़ी भाषा हिन्दी 'एलीट क्लास' से भी जुड़ गई, कामकाज, खेल–जगत, शेयर–मार्किट, वित्त–वाणिज्य, आँकड़े, कार्टून से जोड़ती चली गई इन सबसे बढ़कर कुएं से निकलकर भाषा अथाह अपार समुद्र में विस्तार पाने लगी।

आज आवश्यकता है कि हम एक नए पूर्णतः विकसित तथा वैश्विक दौड़ में अद्यतन सिद्ध होने वाले वातावरण का निर्माण करे। इसके लिए हमें कुछ भाषाई परिवर्तनों को, बदलते मुहावरों को स्वीकारना होगा। पहले निर्माण, फिर परिष्कार के सिद्धान्त को अपनाते हुए इस प्रौद्योगिकी की तमाम चुनौतियों का सामना करना होगा। हिन्दी का वर्चस्व तभी दिनोदिन बढ़ेगा। संसार की किसी भी दुःसह, कठिन, विस्तृत, कोडपरक अथवा अन्य कैसी भी अवधारणा को आत्मसात करने की शक्ति हिन्दी के पास है।

प्रौद्योगिकी की विश्वक्रांति में अब हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में विभिन्न सुविधाएं उपलब्ध हैं। हिन्दी का प्रयोग आज इंटरनेट और ई–मेल में संभव हो गया है तथा हिन्दी में अनेक पोर्टल भी प्रारंभ हो गए हैं। पोर्टल के माध्यम से देश–विदेश की खबरें, वर्गीकृत विज्ञापन, कारोबार संबंधी सूचनाएं, शेयर बाजार, शिक्षा, मौसम, खेलकूद, पर्यटन, साहित्य, संस्कृति, धर्म–दर्शन आदि के बारे में ताजा जानकारी प्राप्त की जा सकती है। पोर्टल में हिंदी ई–मेल की सुविधा भी उपलब्ध है। यह सही है कि इस समय हिंदी सॉफ्टवेयर अंग्रेजी सॉफ्टवेयर की अपेक्षा बहुत कम है, तथापि यह प्रयास जारी है कि हिन्दी और भारतीय भाषाओं में सॉफ्टवेयर निर्मित किए जाएं।

हिन्दी तो 'बहता नीर' है, किसी भी भाषा का कोई भी शब्द उसके साथ बहना चाहे तो वह उसे कंठ से लगा लेती है। वासुदेव शरण अग्रवाल के मत में हिन्दी भाषा उस समुद्र की तरह है, जिसमें अनेक नदियाँ बहती हैं, यह उन सब गुणों से अलंकृत है, जिसके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है। राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त के इन शब्दों से पूर्ण सहमति जताते हुए हम कह सकते हैं कि 'भारत की भावात्मक एकता का साधन 'हिन्दी' ही हो सकती है।'

आज सूचना प्रौद्योगिकी की बृहत्तर भूमिका देखते हुए वैश्विक स्तर पर हिन्दी भौगोलिक सीमाओं को पार कर सूचना टैक्नोलॉजी के परिवर्तित परिदृश्य में विभिन्न जनसंचार माध्यमों में घुलने लगी है। हिंदी के नए सॉफ्टवेयर हो या इंटरनेट, कम्प्यूटर टैक्नोलॉजी, बाज़ारवादी वर्चस्व की चुनौतियों को स्वीकार कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जन माध्यमों में अपनी मानक भूमिका के लिए संघर्षरत है। शीर्ष पंक्ति के रूप में मुहम्मद इकबाल के साथ समूचे हिन्दुस्तान की एक ही आवाज़ है–हिन्दी है हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा।

शब्द दहकता अंगारा होता है। मनुष्य ने सदियों के परिश्रम और अनुभव के बाद इसे जीभ पर रखना सीखा है। जीभ से हलक पर उतारने में महारत हासिल की है और अब उसे इलैक्ट्रोनिक के ग्राफिक–लिपि प्रतीकों में श्रव्य, दृश्य इलैक्ट्रोनिक पटल पर भी उतारने में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त कर ली है।

यह थी प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आगे बढ़ती हिंदी की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्थिति। क्या अब भी आपके मन में हिंदी के भविष्य को लेकर संशय है। क्या अभी भी आप हिंदी की समय के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ने की क्षमता पर प्रश्नचिह्न लगाएँगें। शायद नहीं! इसी सकारात्मक सोच, आशावादी दृष्टिकोण तथा उत्साहित कदमों से हिंदी रथ को आगे बढ़ाते समय हम सभी हिंदी प्रेमियों तथा समर्थकों को कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि से जुड़ना होगा। उनमें विद्यमान कमियों को दूर करना होगा। अपनी आवश्यकता के अनुरूप नए यंत्रों, तकनीकों को खोजना होगा ताकि अत्याधिक जनसंख्या वाले सदा प्रकाशरत इस भारत देश की भाषा हिन्दी विश्वभाषा के उच्च पद को, तथा भारत विश्वगुरू के गौरवशाली आसन को सुशोभित करता रहे।

सहायक ग्रन्थ सूची

1 सूचना प्रौद्योगिकी हिन्दी और अनुवाद, प्रधान संपादक–नीना गुप्ता, संपादक–डॉ. पूरनचंद टंडन।

2 प्रकाशक, भारतीय अनुवाद परिषद्, 24 स्कूल लेन, बंगाली मार्केट, नई दिल्ली में संकलित।

3 भारतीय भाषा–प्रौद्योगिकी का विकास और हिन्दी–डॉ. ओम विकास, 86–89 ।

4 कम्पयूटर युग कऔर हिन्दी–डॉ. रवि शर्मा, 122–131 ।

5 सूचना प्रौद्योगिक : रूप एव स्वरूप, प्रो0 हरिमोहन, 9–19 ।

6 सूचना प्रौद्योगिकी : विविध परिदृश्य, डॉ. हरीश कुमार सेठी, 23–40 ।

7 सूचना प्रौद्योगिक और हिन्दी, डॉ0 अमर सिंह बधान, 132–139 ।